© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

शतपथ ब्राह्मण में प्रतिपादित प्रजापति : एक अध्ययन

शिखा पाण्डेय
शोधच्छात्रा, संस्कृत–विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

समस्त ब्राह्मण ग्रन्थों के मध्य शतपथ ब्राह्मण सर्वाधिक बृहत्काय है। शुक्ल यजुर्वेद की दोनों शाखाओं माध्यन्दिन तथा काण्व में यह उपलब्ध है। इसका गद्य पाठ भी तैत्तिरीय ब्राह्मण के सदृश ही स्वरांकित है।[1]

शतपथ ब्राह्मण के रचयिता वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य माने जाते हैं। वाजसनि के विषय में सायण ने लिखा है कि वे अन्नदाता (वाज–अन्न, सनि–दाता) के रुप में विख्यात थे। वाजसनि का पुत्र होने के कारण इन्हें 'वाजसनेयि' कहा जाता है। शतपथ ब्राह्मण में 100 अध्याय है अतः उसे 'शतपथ' कहा जाता है।[2]

यज्ञों के विधि–विधान तथा विभिन्न अनुष्ठानों का जिस परिपूर्णता के साथ शतपथ में निरुपण का श्रेय इसी ब्राह्मण को प्राप्त है। शतपथ ब्राह्मणकार इस तथ्य से अवगत है कि वैधयाग एक प्रतीकात्मक व्यापार है। इसलिए अन्तर्याग एवं बहिर्याग में पूर्ण सामंजस्य तथा आनुरुप्य पर बल दिया गया है। पाश्चात्य विद्वान् लुईस रेनू ने भी इस ओर इंगित किया है।[3] प्रजापति का यज्ञों के दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उन्हें यज्ञ ही माना गया है। शतपथ में यज्ञों का सांगोपांग वर्णन है।

शुक्ल यजुर्वेदीय शतपथ–ब्राह्मण के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में, ब्रह्म के दो रुप थे–मूर्त्त और अमूर्त्त। इन्हें यत् और 'त्यत्' अर्थात् सत् तथा असत् कहा जा सकता है।[4] यज्ञ विश्व सृष्टि का मूल हेतु है। यज्ञ में ही प्रजाएँ उत्पन्न हुई जिनसे सृष्टि का विकास होता रहा।[5] सृष्टिकर्त्ता प्रजापति यज्ञ है। मनु–मत्स्य–प्रकरण में प्रलय के पश्चात् मनु के द्वारा जल..... एवं आमिक्षा से सम्पादित यज्ञ से एक सुन्दर स्त्री की उत्पत्ति बतलाई गई है। इस प्रकार यज्ञ विश्व की नाभिस्थली है। इससे स्पष्ट होता है कि सृष्टि के आरम्भ में एक मात्र ब्रह्म–तत्त्व की सत्ता थी। **प्रजापतिर्वै इदमग्र आसीत्।**[6]

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि प्रक्रिया का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सृष्टि से पहले किसी भी वस्तु की सत्ता नहीं थी असत् नाम रुप ने यह इच्छा प्रकट की कि मै सतरुप हो जाऊँ–तदसदेव सन्मनोऽकुरुत स्यामिति। उसने तपस्या की जिससे धूम अग्नि, ज्योति अर्चि, मरीचि, उदार और अभ्र की क्रमशः सृष्टि हुई। 'स्रष्टा अर्थात् प्रजापति की बस्ति (मूत्राशय) के भेदन से समुद्र उत्पन्न हुआ–इसी कारण समुद्र का जल आज भी अपेय समझा जाता है।[7]

'' प्रजापति ने 'भू' से इस पृथिवी को उत्पन्न किया, 'भुवः' से अन्तरिक्ष को और 'स्व' से द्यौलोक को। ये जो तीन लोक हैं उतना ही जगत् है। प्रजापति ने 'भू' से ब्राह्मण उत्पन्न किए 'भुव' से क्षत्रिय और 'स्व' से वैश्य। प्रजापति ने 'भू' से आत्मा को 'भुवः' से प्रजा को और 'स्वः' से पशुओं को उत्पन्न किया।[8]

इस प्रकार संसार के समस्त चर एवं अचर पदार्थों की सृष्टि प्रजापति के द्वारा की गयी है। प्रलय के समय जब सब कुछ जलमय हो गया तब इस पर प्रजापति को रुलाई आ गई कि जब मैं कुछ भी नहीं कर सकता, कुछ भी नहीं रच सकता तो मेरी उत्पत्ति ही क्यों हुई? प्रजापति के इसी अश्रु–जल के समुद्र में गिरने से पृथ्वी बनी। कालान्तर से अंतरिक्ष और द्युलोक बना। प्रजापति के जघन भाग से असुरों की सृष्टि हुयी। पुनः प्रजापति ने तपस्या की, जिससे मनुष्यों, देवों और ऋतुओं की सृष्टि हुयी। इस प्रक्रिया में मन का योगदान सर्वाधिक रहा–**असतोऽसृज्यत। मनः प्रजापतिमसृजत। प्रजापतिः प्रजाः असृजत।**[9]

'प्रजापति के नामकरण के संदर्भ में एक प्रसंग ऐतरेय–ब्राह्मण (3/21) में उद्धृत हुआ है कि एक बार इन्द्र ने प्रजापति से अपने लिए उनके महत्त्व की याचना की। इस पर प्रजापति ने इन्द्र से कहा कि मै अपना महत्त्व तुम्हें प्रदान करके स्वयं क्या बनूँगा (अर्थात् कः स्यामक्)। इन्द्र ने उत्तर दिया कि जो कुछ तुम कह रहे हो वही अर्थात् कः बन जाओं? इस प्रकार प्रजापति का नाम 'कः' पड़ गया'' ।[10]

प्रजापति ही सम्पूर्ण सृष्टि को धारण करके उसमें व्याप्त हैं वर्तमान जगत् तथा भूत जगत भी धारण करने वाला प्रजापति ही है। उसी को आधार बनाकर सूर्य उदित होता है तथा प्रकाशित होता है। वह सभी द्विपद एवं चतुष्पद जीवों का शासक है। प्राणियों के जन्म एवं मृत्यु उसी के अधिकार में ही है। विभिन्न दिशाओं एवं उपदिशाओं पर भी उसी का आधिपत्य है। इस प्रकार प्रजापति के श्रम एवं तप से सृष्टि–प्रक्रिया आगे बढ़ी।[11]

यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है।[12] अतः जन्य–जनक संबंध के अभेदत्व के आधार पर यज्ञ को प्रजापति कहा गया है।[13] यज्ञ की इसी अभेदत्त्व महत्त्वपूर्ण उपयोगिता और विविधता को ध्यान में देकर इस शब्द की धातु (यज् देवपूजा संगतिकरण दानेषु' से स्पष्ट किया गया है। इस सर्वोत्तम कर्म को सृष्टिकर्त्ता प्रजापति ने सृष्टि के प्रारम्भ में ही देवों और मनुष्यों के पारस्परिक निः श्रेयस को उत्पन्न किया था।[14]

शतपथ ब्राह्मण में मन एवं वाणी के संवाद को अत्यन्त ललित शैली में प्रस्तुत किया गया है जिसे वाङ्मनस–आख्यान के रुप में जाना जाता है। यहाँ मन एवं वाणी के विषय में अपनी प्रधानता सिद्ध करने के लिए विवाद होता है।

तद्ध मन उवाच। अहमेव त्वच्छ्रेयोऽस्मि न वै मया त्वं कि_च नानभिगतं वदसि सा यन्मम त्वं कृतानुकरा नुवर्त्मास्यहमेव त्वच्छ्रेयोऽस्मीति।[15]

मन ने कहा कि मै श्रेष्ठ हूँ क्योंकि तुम मेरे द्वारा न जानी हुआ कुछ भी नहीं बोलती हो। तुम मेरी अनुगामिनी हो। अतः मैं ही तुमसे श्रेष्ठ हूँ। इस पर वाणी ने कहा कि मै तुमसे बड़ी हूँ क्योंकि जो तुम कुछ जानते हो वह मेरे द्वारा ही व्यक्त होता है।[16]

अतः दोनों ने विवाद को शान्त करने के लिए प्रजापति के पास गये। प्रजापति ने मन के अनुकूल निर्णय लिया। उन्होंने ने समाधान किया कि वाणी से श्रेष्ठ मन है। वाणी मनोऽनुगामी है। बड़े का अनुकरण तथा अनुगमन करने वाला निश्चित हो होता है।

स प्रजापतिर्मनस एवानूवाचचमन एवं त्वच्छ्रेयो मनसो वै त्वं कृतानुकरानुवर्त्मासि श्रेयसो वै पापीयान्कृतानुकरोऽनुवर्त्मा भवति।[17]

अतः विरुद्ध निर्णय को सुनकर वाणी हतोत्साहित हो जाती है उसका गर्भ गिर जाता है। उसने प्रजापति से कहा कि अच्छा तो यही होगा कि मैं आपके लिए 'छवि' ले जाने वाली न होऊँ; क्योंकि आपने मेरे विरुद्ध निर्णय दिया है। यही कारण है कि यज्ञ में प्रजापति के लिए जो कुछ भी किया जाता है वह निम्न स्वर से (उपांशु) किया जाता है। वाणी प्रजापति के लिए छवि का वहन नहीं करती है।

संसार में वर्णव्यवस्था की उत्पत्ति भी प्रजापति के अ.... से हुयी है। प्रजापति ने ब्राह्मण को मुख से क्षत्रिय को बाहु से उरु से वैश्य को पैर से शूद्र को उत्पन्न करके संसार को आधार प्रदान किया। संसार का ऐसा कोई भी तत्त्व नहीं है जो प्रजापति से अछूता हो, स्थूल से लेकर सूक्ष्म तक, आकाश से लेकर पृथिवी तक प्रजापति का अंश ही चराचर विश्व में व्याप्त है। सूर्य, चन्द्र, इन्द्राग्नी और वायु आदि देवताओं की उत्पत्ति क्रमशः उसी के नेत्र, मन, मुख, और प्राण से हुयी है। उपर्युक्त देवों के निवास के लिए द्युलोक, अन्तरिक्ष पृथ्वी लोक की उत्पत्ति उसी परमपुरुष प्रजापति के शिर, नाभि, एवं पादों से हुयी है। ऋक्, यजुष्, सामन् एवं छन्दस की भी उत्पत्ति उसी से मानी गयी है।

सन्दर्भ सूची–

1. शतपथ ब्राह्मण की स्वर प्रक्रिया

2. शतं पन्थानो मार्गा नामाध्याया यस्य तत् शतपथम् (श0ब्रा0मूल) सायण

3. लुईस रेनू Vedic India पृष्ठ 27

4. द्वे वाव ब्राह्मणो रुपे। मूर्त्त चैवामूर्त्तम्। स्थितं च यच्च। सच्च त्यच्च..... शतपथ ब्रा0 14.9.3.9।

5. यंज्ञाद्वै प्रजाः यज्ञात्प्रजायमाना मिथुना प्रजायन्ते..... अन्ततो यज्ञस्येमाः प्रजा प्रजायन्ते। शतपथ ब्रा0 1.9.1.5

6. शतपथ ब्राह्मण 6.1.3.1

7. प्रो0 ओमप्रकाश पाण्डेय, वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरुप तथा विकास पृष्ठ 182

8. शतपथ ब्राह्मण, 2/1/4/11–13

9. तैत्तिरीय ब्राह्मण 2.2.9.10

10. वैदिक सूक्त संग्रह–डॉ0 विजय शक्कर पाण्डेय, पृष्ठ संख्या–20

11. स ऐक्षत कथं नु प्रजायेत इति साऽश्राम्यत् स तपोऽतप्यत्। शतपथ ब्रा0 (2/2/2/1)

12. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म। शतपथ ब्रा0 1/7/3/5

13. शतपथ ब्रा0 1/9/17/4, 4/3/4/3, 11/6/3/9

14. गीता– सह यज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरावाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविषयध्वमेष वोऽस्तिष्ट वामधुक।। 3/10

[15.] शतपथ ब्रा0 1/4/5/9

[16.] शतपथ ब्रा0 1/4/5/10

[17.] शतपथ ब्रा0 1/4/5/11